गाँठदार त्वचा रोग (लम्पी स्किन डिजीज) के बारे में जानकारी एवं बचाव के उपाय (Advisory)

1. रोग का कारणः

- गाँठदार त्वचा रोग (एलएसडी) पशुओं (गाय तथा भैंसो) का विषाणु जनित त्वचा रोग है जो कि पॉक्सविरीडी समूह के केप्री पांक्स श्रेणी के विषाणु द्वारा फैलता है।
- यह वायरस कैप्री पांक्स वायरस जीनस के भीतर तीन निकट संबंधी प्रजातियों में से एक है, इसमें अन्य दो प्रजातियाँ गोट पॉक्स तथा शीप पॉक्स है।
- यह रोग गायों में भैंसो की तुलना में अधिक पाया जाता है तथा सामान्य तौर पर देशी गायों की तुलना में संकर नस्ल गायों में अधिक तीव्रता से होता है।
- गाँठदार त्वचा रोग, सभी उम्र के पशुओं में होती है लेकिन व्यस्क जानवरों की तुलना में छोटे बछड़े/बछड़ियों में संक्रमण होने की संभावना अधिक होती है।
- सामान्यतः इस बीमारी में मृत्यु दर कम है लेकिन संक्रमित पशु कमजोर हो जाता है और पशु की प्रतिरोधक क्षमता कम होने के कारण दूसरी बीमारीयों से भी संक्रमित हो जाता है।

2. रोग का फैलावः

- गर्म आर्द्र जलवायु के जब बाह्य परजीवियों (किलनी, मच्छरों और मख्खियों) की अधिकता होती है ऐसी वातावरणीय परिस्थतियों में इस रोग का प्रसार अधिक होता है।
- वायरस स्वस्थ तथा संक्रमित पशुओं के सीधे संपर्क के माध्यम से भी फैल सकता है।
- इस रोग का प्रसार कृत्रिम तथा प्राकृतिक गर्भाधान के माध्यम से भी हो सकता है क्योकि इस रोग का वायरस संक्रमित पशु के वीर्य में मौजूद होता है।

3. रोग के लक्षणः

- संक्रमित पशुओं में तेज बुखार रहता है तथा पशुओं की नाक तथा मुँह से पानी आता रहता है तथा पशु का उत्पादन कम हो जाता है।
- संक्रमित पशु की त्वचा पर 5 से 50 मिमी व्यास की गाँठे सम्पूर्ण शरीर और मुख्य रूप से सर गर्दन पैरीनियम थन पैर आदि में दिखाइ देने लगती है।
- कभी – कभी मुँह और नाक में छाले बन जाते है मुँह में छालों के कारण बीमार पशु चारा दाना पानी छोड़ देता है तथा मुँह से लार गिराता रहता है।
- बीमार पशु के गल, कम्बल, छाती तथा पैरों में सूजन आ जाती है जिसके कारण पशु को चलने फिरने में कठिनाई होती है।
- संक्रमित पशु में निमोनिया के भी लक्षण आते है।

4. रोग की जाँचः

- त्वचा के ऊपर की गाँठों और रक्त के नमूनों को इकठ्ठा कर प्रयोगशाला में भेज कर पता लगाया जा सकता है।

5. रोग का उपचारः

- चुंकि लम्पी स्किन डिजीज विषाणुजनित रोग है इसलिए इसका प्रभावी उपचार उपलब्ध नहीं है हालांकि यदि आवश्यक उपचार पशु चिकित्सक की सलाह पर तुरन्त दिया जाये तो पशु पूरी तरह ठीक हो सकता है।
- बीमारी से ग्रसित पशुओं को पशु चिकित्सक की सलाह से एन्टी बायोटिक्स, ज्वर नाशक, एन्टीहिस्टेमाइन तथा प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाने वाले विटामिन का उपयोग कर सकते है।
- त्वचा के जख्म के लिए एन्टीसेप्टिक/फ्लाईरेन्फलेट स्प्रे का उपयोग किया जा सकता है।

6. **रोकथाम के उपायः** पशुओं के इस लम्पी स्किन डिजीज को रोकने के लिए निम्न उपाय करने चाहिए :

- संक्रमित पशुओं को स्वस्थ पशुओं से तुरन्त अलग कर देना चाहिए।
- संक्रमित तथा स्वस्थ पशुओं को एक साथ चलने के लिए नहीं छोड़ा जाना चाहिए।
- अन्य क्षेत्रों में प्रभावी क्षेत्र से पशुओं की आवाजाही रोक देनी चाहिए।
- संक्रमण के दौरान पशुओं को पशुमण्डी तथा पशु मेलों में नही ले जाना चाहिए।
- संक्रमण के दौरान फार्म पर बाहरी व्यक्तियों की आवाजाही रोक देनी चाहिए।
- संक्रमित पशुओं की देखभाल करने वाले व्यक्ति को यदि सम्भव हो सके तो स्वस्थ पशुओं की देखभाल से अलग रखना चाहिए।
- संक्रमित जानवरों के संपर्क मे आने वाली सामग्री जैसे : वाहन परिसर आदि को रसायन किटाणु रहित किया जाना चाहिए इसक लिए ईथर (20%), क्लोरोफॉम, फॉर्मलीन 1%, सोडियम हाइप्रोक्लोराईड (2–3%), आयोडीन पदार्थ (1:33) तथा क्वार्टरनरी अमोनियम (0. 5%)पदार्थ काम में लिया जा सकता है।
- पशु को फैलाने वाले कारकों जैसे किलनी, मच्छरों और मख्खियों को नियंत्रित करने के उपाय करने चाहिए।
- पशुपालकों को लम्पी स्किन डिजीज के कारण लक्षण तथा फैलने से रोकने वाले उपायों के बारें में जागरूकता अभियान चलाने चाहिए।
- संक्रमित पशु के मृत्यु की स्थिति में मृत पशु को गहरा गढ्ढा खोद कर निस्तारण करना चाहिए।
- **टीकाकरणः** चार माह से ऊपर के स्वस्थ पशुओं में गोट पॉक्स के टीकाकरण द्वारा पशुओं को बीमारी के प्रकोप से बचाया जा सकता है।

2/8/2022

(प्रो. ए.पी. सिंह)
विभागाध्यक्ष, पशु औषध विभाग
सी.वी.ए.एस., बीकानेर